## बाबू लाल मधुकर

कवि **बाबू लाल मधुकर** के जनम 8 सितम्बर 1940 के नालंदा जिला के ढेकवाहा गाँव, (इस्लामपुर) में भेल। 'रमरतिया' इनकर ख्याति प्राप्त उपन्यास हे जेकर अनुवाद रसियन भासा में भी होल हे । 74 आंदोलन के कवि के रूप में चर्चित मधुकर जी के **'लहरा'**, **'अँगुरी के दाग'**, **'मितवा के नाम'** आदि कविता संगरह हे। **'अलगंठवा'** उपन्यास अप्पन अमिट छाप छोड़ रहल हे । **'नयका भोर'** नाटक के भी काफी सोहरत भेल। राज्य सरकार के राजभाषा विभाग आउ राष्ट्रभाषा परिषद् से भी ई पुरस्कृत हो चुकलन हे। ई साहित्य कोटा से बिहार विधान परिषद के सदस्य रह चुकलन हे।

कवि बाबूलाल मधुकर 'तोहरे नाम' पाती के माध्यम से बतलावे के कोसिस करित हथ कि सब साधन होला के बावजूद छेत्तर में आसान्ति हे। भुखमरी, बेरोजगारी मुँह बयले हे। गरीब के केवाला जमीन मँहगाई के मार से रेहन हो रहल हे। तइयो में भयावह स्थिति के विरोध के स्वर सुनाई न पड़ रहल हे। ई ताज्जुब के बात हे।

## तोहरे नाम

**लिखलियो कोई हरफ,**
**कि कोई पाँती,**
**उगलो तोहरे नाम**
**कि जुड़लो छाती।**

**घिरलो हे घनसाम इहाँ**
**फिर भी लहलह घाम इहाँ**
**मठ-मंदिल-मसजिद के पचड़ा में**

बदनाम हको हर धाम इहाँ।

निरैठा-निरगुन-अमनिया में
हो भेद बहुत,
निगरल-निखरल तोहरे रूप सगुनिया
कि मुसकइ संझा बाती।

जन-जन में हाहाकार भरल हो,
हर बोली में गोली कि गरल भरल हो,
पटौर पड़ल हो नक्सा पर हर गाँव इहाँ,
नगर-डगर हो तातल कि
अलकतरा तरल भरल हो।

खखन धरती परती पर गाजे धान
कि नाचे मोर,
हरखे मन कुरचे बरसऽ बूँद सेवाती।

घर के आँटा गिला भेलो,
कुछ रेहन केवाला भेलो,
घर में भूँजी-भाँग नयँ तनिको,
फिन भी मुँह पर ताला भेलो,
गुमसुम हको रात कि चुप्पी साधले बात
अइसन में तूँ छेड़ऽ राग पराती।

गंगा तट पर भीड़ जुटल हो,
धुनी रमल हो पापी-पुन्नी के,
होतइ कब इंसाफ इहाँ पर
असली-नकली खूनी के,
तेतर तिवारी पान लगावइ,

रोज रजेसर खोलइ रोजा,
गंगा मइया तोहिं बेड़ा पार लगावऽ,
हम तो तोहरे थाती।

लिखलियो कोई हरफ कि कोई पाती,
उगलो तोहरे नाम कि जुड़लो छाती।

## अभ्यास-प्रस्न

**मौखिक :**

1. (क) कवि के छाती कइसे जुड़ल ?

   (ख) धार्मिक झगड़ा-झंझट कउन पारा में आयल हे ?

   (ग) 'मुसकइ संझा-बाती' के मतलब का हे ?

   (घ) गंगा तट पर भीड़ काहेला जुटल हे ?

   (ङ) राग-पराती का हे ? कवि एकरा छेड़ेला काहे कह रहल हे ?

**लिखित :**

1. कवि बाबूलाल मधुकर के चार पंक्ति में परिचय दऽ ।
2. 'घिरलो हे घनसाम इहाँ' के जरिए कवि का कहेला चाह रहल हे ?
3. निम्नलिखित पंक्ति के भाव बतावऽ :

   (क) जन-जन में हाहाकार भरल हो,
   हर बोली में गोली कि गरल भरल हो,
   पटौर पड़ल हो नक्सा पर हर गाँव इहाँ,
   नगर-डगर हो तातल कि
   अलकतरा तरल भरल हो ।

4. नीचे लिखल पंक्ति के संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :—

   (क) घर के आँटा गिला भेलो,
   कुछ रेहन केवाला भेलो,

घर में भूँजी-भाँग नयँ तनिको,
फिर भी मुँह पर ताला भेलो ।

**भासा-अध्ययन :**

1. कविता में आयल सहचर सबद के छाँट के लिखऽ ?
2. 'गुमसुम हको रात कि चुप्पी साधले बात' के माध्यम से कवि का कहेला चाह रहल हे ?
3. कविता के सिल्प-सौन्दर्य पर परकास डालऽ ?
4. 'रोज रजेसर खोलइ रोजा' के मतलब समझावऽ ?

**योग्यता-विस्तार :**

1. (क) तूहूँ एगो अइसने पाती लिखऽ (गद्य इया पद्य में)

   (ख) ई कविता कउन तरह के हे ?

   (i) श्रृंगारिक (ii) प्रगतिवादी (iii) समकालीन (iv) प्रयोगवादी ।

   (ग) पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनके अरथ सहित वाक्य बनावऽ।

**शब्दार्थ :**

| | | |
|---|---|---|
| हरफ | — | अच्छर; |
| निरइठा | — | सुद्ध; |
| अमनिया | — | पवित्तर; |
| निखरल | — | साफ-सुथरा; |
| पटौर | — | पेटकुनिए; |
| तातल | — | धीपल; |
| खखन | — | बेयगर; |
| गुमसुम | — | चुपचाप; |
| राग-पराती | — | अनमुहान में गावे ओला सुरे गीत, |
| इंसाफ | — | न्याय |

●●●